प्रियतम:, पुं, मयूरशिखावृक्ष:। इति शब्दचन्द्रिका॥ (अयमेषामतिशयेन प्रिय:। प्रिय+तमप्।) अतिशयप्रिये, त्रि॥

प्रियतर:, त्रि, (अयमनयोरतिशयेन प्रिय:। प्रिय+तरप्।) अनयोरतिशयेन प्रिय:। इति व्याकरणम्॥ (यथा, गौ॰ रामायणे। २। ३८। ७।
"प्राणेभ्योऽपि प्रियतरो ज्येष्ठो भ्राता गुरुश्च ते।
तस्मादस्य प्रयत्नेन त्वं शरीरं प्रतिपालय॥")

प्रियता, स्त्री, (प्रिय+तल्।) प्रियस्य भाव:। हार्द्दम्। इत्यमर:। १।७।२७॥ (यथा, मनु:। ५। ५०।
"न भक्षयति यो मांसं विधिं हित्वा पिशाचवत्।
स लोके प्रियतां याति व्याधिभिश्च न पीड्यते॥")

प्रियतोषण:, पुं, (प्रियस्य तोषणं यस्मात्। यद्वा, प्रियं तोषयतीति। तुष्+णिच्+ल्यु:।) षोड़शबन्धातिरिक्तरतिबन्धविशेष:। तस्य लक्षणं यथा,—
"नारी पादौ स्वहस्तेन धारयेज्जघनोपरि।
स्तनापीड़कर: कामी कामयेत् प्रियतोषण:॥"
इति रतिमञ्जरी॥
प्रियस्य तुष्टिकारिणि, त्रि॥

प्रियत्वं, क्ली, (प्रियस्य भाव:। प्रिय+त्व।) प्रियता। तत्पर्य्याय:। प्रेम २ प्रेमा ३ स्नेह: ४ प्रणय: ५ हार्द्दम् ६ प्रियता ७ स्निग्धता ८। इति शब्दरत्नावली॥

प्रियदर्शन:, त्रि, (प्रियं दर्शनं यस्य।) सुदृश्य:। तत्पर्य्याय:। चक्षुष्य: २। इति जटाधर:॥ (यथा, रघु:। १। ४७।
"स्तत्द्भूमिपति: पत्न्यै दर्शयन् प्रियदर्शन:।
अपि लङ्घितमध्वानं बुबुधे न बुधोपम:॥")

प्रियदर्शन:, पुं, (प्रियं दर्शनं यस्य।) शुकपक्षी। क्षीरिकावृक्ष:। इति जटाधर:॥ (गन्धर्व्वविशेष:। यथा, रघु:। ५। ५३।
"अवेहि गन्धर्व्वपतेस्तनूजं
प्रियंवदं मां प्रियदर्शनस्य॥")

प्रियप्रायं, क्ली, (प्रियस्य प्रायो यत्र।) प्रियवाक्यम्। तत्पर्य्याय:। चटु २ चाटु ३। इति हेमचन्द्र:। २। १७८॥

प्रियप्रेप्सु:, त्रि, (प्रियं प्रेप्सतीति। प्र+आप्+सन्+उ:।) इष्टार्थोद्युक्तम्। उत्सुक:। इति जटाधर:॥

प्रियमधु:, पुं, (प्रियं मधु मद्यं यस्य।) बलराम:। इति हेमचन्द्र:। २। १३८॥

प्रियवर्णी, स्त्री, (प्रियो वर्णो यस्या:। गौरादित्वात् ङीष्।) प्रियङ्गु:। इति जटाधर:॥

प्रियवल्ली, स्त्री, (प्रिया मनोज्ञा वल्ली लता।) प्रियङ्गु:। इति राजनिर्घण्ट:॥

प्रियवादी, [न्] त्रि, (प्रियं मनोज्ञं वदतीति। वद्+णिनि:।) मनोज्ञवक्ता। यथा, चाणक्ये।
"कोऽतिभार: समर्थानां किं दूरं व्यवसायिनाम्।
को विदेश: सविद्यानां क: पर: प्रियवादिनाम्॥"
(यथा च पञ्चतन्त्रे। २। १७४।
"सुलभा: पुरुषा राजन्! सततं प्रियवादिन:।
अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभ:॥")

प्रियव्रत:, पुं, (प्रियं व्रतं यस्य।) स्वायम्भुवमनुपुत्त्र:। यथा,—
"प्रियव्रतोत्तानपादौ मनो: स्वायम्भुवस्य तु।
द्वौ पुत्त्रौ सुमहावीर्य्यौ धर्म्मज्ञौ कथितौ तव॥"
इत्यग्निपुराणम्॥
(प्रियाणि व्रतानि यस्येति विग्रहे व्रतप्रिये, त्रि। यथा, ऋग्वेदे। १०। १५०। ३।
"अग्ने देवानावह न: प्रियव्रतान्
मृळीकाय प्रियव्रतान्॥")

प्रियसख:, पुं, (प्रिय: सखा च हितकारित्वात्। "राजाह:सखिभ्यष्टच्।" ५।४।९१। इति टच्।) खदिर:। इति शब्दचन्द्रिका॥ प्रियश्चासौ सखा चेति। (प्रियबन्धु:। यथा, मेघदूते। १२।
"आपृच्छस्व प्रियसखममुं तुङ्गमालिङ्ग्य शैलम्॥")
प्रियस्य सखा इति च। इति व्याकरणम्॥

प्रियसत्यं, क्ली, (प्रियं सत्यमिति कर्म्मधारय:।) सुनृतवाक्यम्। इति हेमचन्द्र:। २। १७८॥ (प्रियं सत्यं यस्येति विग्रहे सत्यप्रिये, त्रि॥)

प्रियसन्देश:, पुं, (प्रियं सन्दिशतीति। प्रिय+सम्+दिश+अण्।) चम्पकवृक्ष:। इति शब्दचन्द्रिका॥ (प्रिय: सन्देश इति कर्म्मधारय:।) प्रियसंवादश्च॥

प्रियसालक:, पुं, (प्रिय: साल:। तत: स्वार्थे कन्।) असनवृक्ष:। इति राजनिर्घण्ट:॥ पेयासाल इति ख्यात:॥

प्रिया, स्त्री, (प्रिय+टाप्।) नारी। इति शब्दरत्नावली॥ भार्य्या। इति हेमचन्द्र:॥ (यथा, कुमारे। ३। ३८।
"पुष्पासवाघूर्णितनेत्रशोभि
प्रियामुखं किम्पुरुषश्चुचुम्बे॥")
एला। इति शब्दचन्द्रिका। मल्लिका। मदिरा। इति राजनिर्घण्ट:॥ वार्त्ता। इति धरणि:॥ (पञ्चाक्षरच्छन्दोविशेष:। इति छन्दोमञ्जरी॥)

प्रियाम्बु:, पुं, (प्रियमम्बु यस्य।) आम्रवृक्ष:। इति राजनिर्घण्ट:॥ तत्फले हृद्यजले च क्ली॥ (जलप्रिये, त्रि॥)

प्रियाल:, पुं, (प्रियाय हिताय अलति पर्य्याप्नोतीति। अल+अच्।) वृक्षभेद:। पियाल इति भाषा। अस्य बीजं चिरञ्जीति प्रसिद्धम्। तत्पर्य्याय:। चार: २ अखङ्ग: ३ खरस्कन्ध: ४ ललन: ५ चारक: ६ बहुवल्क: ७ सन्नद्रु: ८ तापसप्रिय: ९ स्नेहबीज: १० उपवट: ११ मन्दवीर्य्य: १२। इति राजनिर्घण्ट:॥ पियाल: १३। इत्यमर:। २।४।३५॥ बहुलवल्कल: १४ राजादनम् १५ तापसेष्ट: १६ सन्नकद्रु: १७ धनु:पट: १८। अस्य गुणा:। पित्तकफास्रनाशित्वम्॥ तत्फलगुणा:। मधुरत्वम्। गुरुत्वम्। स्निग्धत्वम्। सरत्वम्। मरुत्पित्तदाहज्वरतृष्णापहत्वञ्च। तन्मज्जगुणा:। मधुरत्वम्। वृष्यत्वम्। पित्तानिलापहत्वम्। हृद्यत्वम्। दुर्ज्जरत्वम्। स्निग्धत्वम् विष्टम्भित्वम्। आमवर्द्धनत्वञ्च। इति भावप्रकाश:॥ अपि च।
"चारस्य च फलं पक्वं वृष्यं शीतलाम्लकं गुरु।
तद्बीजं मधुरं वृष्यं पित्तदाहार्त्तिनाशनम्॥"
इति राजनिर्घण्ट:॥

प्रियाला, स्त्री, (प्रियाय अलतीति। अल+अच्+टाप्।) द्राक्षा। इति राजनिर्घण्ट:॥

प्रियोदितं, त्रि, (प्रियाय प्रियेण वा यदुदितम्। प्रियमुदितमिति वा।) चाटुवाक्यम्। इति शब्दरत्नावली॥ प्रियवाक्यविषय:॥ (प्रियकथितवाक्यञ्च॥)

प्री, क तर्पणे। इति कविकल्पद्रुम:॥ (चुरा॰-पर॰-सक॰-अनिट्।) क, यं प्राययन्ति कविसूक्तिरसायनानि। इति हलायुध:॥ प्रीणयत्ययीति केचित्। इति दुर्गादास:॥

प्री, ङ य प्रीतौ। कान्तौ। इति कविकल्पद्रुम:॥ (दिवा॰-आत्म॰-अक॰-अनिट्।) प्रीतिरिह प्रीतीभाव:। ङ य, य: प्रीयते प्रणयिषु। इति हलायुध:। इति दुर्गादास:॥

प्री, ञ तर्पणे। इति कविकल्पद्रुम:॥ (भ्वा॰-उभ॰-सक॰-अनिट्।) ञ, प्रयति प्रयते। इति दुर्गादास:॥

प्री, ञ श कान्तौ। तर्पणे। इति कविकल्पद्रुम:॥ (क्र्या॰-उभ॰-अक॰-सक॰ च-अनिट्।) तर्पणमिह प्रीतीभाव: प्रीतीकरणञ्च। ञ श, प्रभु: प्रीणातु विश्वभुक्। प्रीणाति बान्धवजनानिति हलायुध:। प्रीणीते। इति दुर्गादास:॥

प्री:, स्त्री, (प्री+क्विप्।) प्रीति:। इति कनधातुटीकायां दुर्गादास:॥ प्रथमा विभक्ति:। यथा, "त्रिश: प्रीङ्गीत्रीचीपीषीप्ना:। स्यादीनि त्रीणि त्रीणि क्रमात् प्रीङीत्रीचीपीषीप्नीसंज्ञानि स्यु:।" इति मुग्धबोधव्याकरणम्॥

प्रीण:, त्रि, (प्र+"नश्च पुराणे प्रात्।" ५।४।२५। इत्यस्य वार्त्तिकोक्त्या ख:।) पुरातन:। इति त्रिकाण्डशेष:॥ प्रीत:। इति व्याकरणम्॥

प्रीणनं, क्ली, (प्री+स्वार्थे णिच्+ल्युट्। धूञ्प्रीञोरिति नुक्।) तृप्तिकरणम्। तत्पर्य्याय:। तर्पणम् २ अवनम् ३। इत्यमर:। ३। २। १॥ (यथा, महानिर्व्वाणतन्त्रे। २। ४७।
"तस्मिंस्तुष्टे जगत्तुष्टं प्रीणिते प्रीणितं जगत्।
तदाराधनतो देवि! सर्व्वेषां प्रीणनं भवेत्॥")

प्रीणस:, पुं, गण्डक:। इति राजनिर्घण्ट:॥

प्रीत:, त्रि, (प्रीञ् प्रीणने+क्त:।) प्रीतियुक्त:। तत्पर्य्याय:। हृष्ट: २ मत्त: ३ तृप्त: ४ प्रह्लन्न: ५ प्रमुदित: ६। इत्यमर:। ३।१।१०३॥ हर्षित: ७। (यथा, महाभारते। ४। ४०। २।
"प्रीतोऽस्मि पुरुषव्याघ्र! न भयं विद्यते तव।
सर्व्वांस्तुदामि ते शत्रून् रणे रणविशारद!॥")
क्ली, नर्म्म। इति मेदिनी। ते, ३३॥

प्रीति:, स्त्री, (प्रीञ् तर्पणे+भावे क्तिन्।) तृप्ति:। (यथा, रामायणे। १। ६८। १२।